Shodhaamrit, Vol.-1; Issue-2 (July-December) 2024 : Page No.-115-120

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

Online ISSN-3048-9296
Vol.-1; issue-2 (July-Dec.) 2024
Page No- 115-120

©2024 Shodhaamrit (Online)
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

गौरी शंकर
सहायक आचार्य,
राजकीय महाविद्यालय
बीरमाना, श्री गंगानगर.

Corresponding Author :
गौरी शंकर
सहायक आचार्य,
राजकीय महाविद्यालय
बीरमाना, श्री गंगानगर.

वर्चुअल साहित्यों की दुनिया: सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी साहित्य का पुनराविष्कार

सारांश : इस शोध पत्र का उद्देश्य डिजिटल युग में हिंदी साहित्य पर सोशल मीडिया और ब्लॉगिंग के प्रभावों का विश्लेषण करना है। वर्तमान अध्ययन में यह देखा गया है कि कैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म साहित्यिक अभिव्यक्ति, रचनात्मक नवाचार तथा पारंपरिक साहित्यिक आलोचना के स्वरूप को परिवर्तित कर रहे हैं। इस शोध में ब्लॉग, सोशल मीडिया पोस्ट और ऑनलाइन साहित्यिक समुदायों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक साहित्यिक विधाओं एवं डिजिटल साहित्य के बीच सामंजस्य एवं विरोधाभास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सामग्री विश्लेषण एवं थीमैटिक कोडिंग के माध्यम से महत्वपूर्ण रुझानों एवं परिवर्तन की पहचान की गई है। अध्ययन के परिणाम हिंदी साहित्य में डिजिटल नवाचार एवं पाठक-लेखक संवाद की नई दिशाओं को उजागर करते हैं। यह शोध पत्र भविष्य के साहित्यिक अनुसंधान हेतु एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेगा तथा तकनीकी युग में साहित्य के विकास पर प्रकाश डालेगा। साहित्य में परिवर्तन प्रमाणित है।

कीवर्ड्स : डिजिटल साहित्य, सोशल मीडिया, हिंदी साहित्य, ब्लॉगिंग, साहित्यिक नवाचार, साहित्यिक आलोचना, परंपरागत एवं आधुनिक साहित्य, ऑनलाइन साहित्यिक समुदाय

परिचय : वर्तमान डिजिटल युग ने साहित्य के परिदृश्य में अभूतपूर्व परिवर्तन को जन्म दिया है। सोशल मीडिया, ब्लॉगिंग और अन्य ऑनलाइन मंचों के आगमन ने साहित्यिक अभिव्यक्ति, रचनात्मक नवाचार तथा संवाद के स्वरूप में नए आयाम स्थापित किए हैं। इन डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से हिंदी साहित्य ने न केवल अपनी

पारंपरिक विधाओं को चुनौती दी है, बल्कि नई रचनात्मक संभावनाओं एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का भी विकास किया है[1-2]।

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि कैसे सोशल मीडिया और ब्लॉगिंग ने हिंदी साहित्य के पुनराविष्कार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल माध्यमों के आगमन ने साहित्यिक परंपराओं में परिवर्तन की एक नई लहर पैदा की है, जिससे नये लेखक, पाठक और आलोचक आपस में संवाद स्थापित करने लगे हैं। इस अध्ययन में यह देखा जाएगा कि किस प्रकार इन डिजिटल मंचों पर साहित्यिक रचनाएँ नयी पहचान पा रही हैं तथा पारंपरिक साहित्यिक मानदंडों के साथ किस प्रकार तालमेल बिठा रही हैं[3-4]।

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजना है:

1. डिजिटल युग के आगमन के पश्चात हिंदी साहित्य में कौन-कौन से महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं?
2. सोशल मीडिया और ब्लॉगिंग ने साहित्यिक रचनाओं तथा आलोचना के स्वरूप को कैसे प्रभावित किया है?
3. पारंपरिक साहित्यिक विधाओं एवं डिजिटल साहित्य के बीच किस प्रकार का अंतर्संबंध तथा संघर्ष उत्पन्न हुआ है?

इस अध्ययन के परिणाम न केवल हिंदी साहित्य में हो रहे डिजिटल नवाचारों की व्यापक समझ प्रदान करेंगे, बल्कि भविष्य के साहित्यिक अनुसंधान एवं रचनात्मक प्रयोगों के लिए मार्गदर्शन भी प्रस्तुत करेंगे।

साहित्य समीक्षा

डिजिटल युग में हिंदी साहित्य का विकास : कुमार[5] ने अपने शोध में यह उल्लेख किया है कि कैसे इंटरनेट एवं डिजिटल प्रौद्योगिकी ने हिंदी साहित्य की धारा को नया मोड़ दिया है। डिजिटल युग में साहित्यिक निर्माण के परंपरागत ढांचे में आई इस क्रांति ने लेखकों, पाठकों एवं आलोचकों के बीच संवाद की एक नई रेखा स्थापित की है। बनर्जी[6] के अनुसार, सोशल मीडिया के माध्यम से साहित्य में आने वाले नवाचारों ने रचनात्मक अभिव्यक्ति के नए स्वरूप को जन्म दिया है। इन शोधों से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यमों ने न केवल साहित्य के उत्पादन को प्रभावित किया है, बल्कि इसके वितरण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक प्रसार के तरीके को भी पुनर्परिभाषित किया है।

ब्लॉगिंग एवं डिजिटल कथानक

ब्लॉगिंग ने साहित्यिक अभिव्यक्ति के पारंपरिक ढांचे में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। शर्मा[7] ने ब्लॉगिंग को एक ऐसा मंच बताया है, जहाँ लेखक पारंपरिक लेखन शैली से हटकर, संवादात्मक एवं प्रयोगात्मक रूप में अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करते हैं। इसी संदर्भ में, जैन[8] ने यह बताया है कि कैसे ब्लॉगिंग ने हिंदी कविता तथा गद्य विधाओं के पुनर्निर्माण में सहायक भूमिका निभाई है। इन नवाचारों ने न केवल साहित्य के स्वरूप को विस्तृत किया है, बल्कि पाठकों को भी एक अधिक पारदर्शी एवं संवादात्मक अनुभव प्रदान किया है। डिजिटल कथानक ने साहित्यिक विषयों की प्रस्तुति में लचीलापन एवं नवीनता का परिचय दिया है।

पारंपरिक एवं आधुनिक साहित्यिक रूपों का एकीकरण : पारंपरिक साहित्यिक विधाओं एवं डिजिटल रचनाओं के बीच एक गतिशील संबंध देखा जा रहा है। बोस[9] ने ऑनलाइन साहित्यिक समुदायों की भूमिका को उजागर करते हुए यह तर्क प्रस्तुत किया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पारंपरिक साहित्यिक आलोचना एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ सामंजस्य स्थापित कर रहे हैं। देसाई[10] के अनुसार, सामाजिक मीडिया के माध्यम से साहित्य में होने वाले संवादात्मक परिवर्तनों ने पारंपरिक विधाओं को पुनर्परिभाषित किया है। इस एकीकरण ने साहित्यिक आलोचना, कथा संरचना तथा अभिव्यक्ति के नए आयाम खोले हैं, जो समकालीन हिंदी साहित्य की प्रगति में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

क्षेत्रीय एवं वैश्विक दृष्टिकोण : चटर्जी[11] के शोध में भारतीय क्षेत्रीय साहित्य में डिजिटल कथाओं के

उदय का विशद वर्णन मिलता है। उनके अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि कैसे क्षेत्रीय साहित्य ने डिजिटल माध्यमों का सहारा लेकर अपने सांस्कृतिक मूल्यों एवं परंपराओं को नई पहचान दी है। इस संदर्भ में, वैश्विक साहित्यिक परिदृश्य में भी डिजिटल नवाचारों के प्रभाव को स्वीकार किया जा रहा है। वैश्विक दृष्टिकोण से देखा जाए तो सोशल मीडिया एवं ब्लॉगिंग न केवल साहित्य के वितरण के तरीके में परिवर्तन ला रहे हैं, बल्कि यह साहित्यिक विषयों के बहुआयामी विश्लेषण एवं संवाद को भी समृद्ध कर रहे हैं।

सारांश : उपरोक्त साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग में हिंदी साहित्य ने व्यापक रूप से विकास के नए चरण में प्रवेश किया है। डिजिटल तकनीक एवं सोशल मीडिया ने साहित्य के पारंपरिक स्वरूपों में नवाचार के तत्व प्रस्तुत किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप लेखक एवं पाठक दोनों के बीच एक नया संवाद स्थापित हुआ है। ब्लॉगिंग एवं अन्य ऑनलाइन मंचों के माध्यम से साहित्यिक रचनाओं ने अपनी अभिव्यक्ति को विस्तृत किया है, जबकि पारंपरिक साहित्यिक विधाओं एवं आधुनिक डिजिटल साहित्य के बीच एक सजीव तालमेल देखने को मिला है। इन शोधों एवं अध्ययनों ने हिंदी साहित्य में होने वाले परिवर्तनों की विभिन्न आयामों को उजागर किया है, जो भविष्य में साहित्यिक अनुसंधान एवं रचनात्मक प्रयोगों के लिए एक मजबूत आधार प्रस्तुत करते हैं।

विश्लेषण एवं चर्चा

हिंदी साहित्य में डिजिटल परिवर्तन : डिजिटल युग में साहित्यिक निर्माण के ढांचे में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करते हुए, यह पाया गया है कि इंटरनेट और सोशल मीडिया ने हिंदी साहित्य की परंपरा में एक व्यापक परिवर्तन की लहर चला दी है। कुमार[12] के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल प्लेटफार्मों के आगमन से लेखकों के रचनात्मक क्षेत्र में नयापन आया है। परंपरागत प्रकाशन प्रक्रियाओं की सीमाओं से मुक्त होकर, ऑनलाइन मंचों पर साहित्यकार अपनी अभिव्यक्ति को तत्काल और व्यापक रूप से साझा करने लगे हैं। मुखर्जी[13] द्वारा वर्णित 'डिजिटल दस्तान' इस बात का प्रमाण है कि सोशल मीडिया और ब्लॉगिंग ने कहानी कहने के पारंपरिक स्वरूप को पुनः परिभाषित कर दिया है। उदाहरण स्वरूप, ऐसे कई ऑनलाइन ब्लॉग और साहित्यिक फोरम हैं जहाँ पारंपरिक काव्य विधाओं के साथ-साथ नवाचारी कथानक भी प्रकट हो रहे हैं। इस प्रकार, डिजिटल परिवर्तन ने हिंदी साहित्य में न केवल नए रचनात्मक साधन उपलब्ध कराए हैं, बल्कि साहित्यिक अभिव्यक्ति के तरीके में मौलिक परिवर्तन भी लाया है।

साहित्यिक नवाचार में सोशल मीडिया की भूमिका : सोशल मीडिया के प्रभाव ने हिंदी साहित्य के रचनात्मक क्षेत्र में एक नए प्रयोगात्मक आयाम को जन्म दिया है। सिंह[14] के अनुसार, सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, और इंस्टाग्राम पर लेखक पारंपरिक रूप से स्थापित साहित्यिक नियमों से हटकर स्वतंत्र अभिव्यक्ति के नए मॉडल अपनाने लगे हैं। शर्मा[15] के विश्लेषण में यह देखा गया है कि ब्लॉगिंग ने न केवल साहित्यिक शैली में नवीनता लाई है, बल्कि पाठक-लेखक संवाद की पारदर्शिता और गतिशीलता को भी बढ़ावा दिया है। इन डिजिटल मंचों पर पाठकों की टिप्पणियाँ, आलोचनाएँ एवं विचार-विमर्श साहित्यिक रचनाओं में तुरंत प्रभाव छोड़ते हैं, जिससे रचनाकारों को तत्काल फीडबैक प्राप्त होता है। बोस[16] के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि ऑनलाइन साहित्यिक समुदायों ने न केवल रचनात्मक प्रयोगों को प्रोत्साहित किया है, बल्कि परंपरागत आलोचना के ढांचे में भी सुधार की संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। इस प्रकार, सोशल मीडिया न केवल रचनात्मक नवाचार के उपकरण बने हैं, बल्कि साहित्यिक संवाद एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण में भी व्यापक परिवर्तन का कारक सिद्ध हुए हैं।

साहित्यिक आलोचना एवं कहानी कहने के नए स्वरूप : डिजिटल युग में साहित्यिक आलोचना के परंपरागत मानदंडों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। देसाई[17] ने तर्क दिया है कि सोशल

मीडिया के आगमन से साहित्यिक आलोचना में अधिक समकालीन और बहुआयामी दृष्टिकोण विकसित हुआ है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों पर आलोचकों तथा पाठकों के बीच होने वाले विचार-विमर्श ने आलोचना के क्षेत्र में नवीन पद्धतियों और दृष्टिकोणों को जन्म दिया है। जैन[18] के विश्लेषण में यह उभरा है कि ब्लॉगिंग ने कविता और गद्य में नए प्रयोगात्मक तत्वों को जोड़कर पारंपरिक विधाओं का पुनराविष्कार किया है। इसी संदर्भ में, वर्मा[19] के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल रचनाओं में कहानी कहने की तकनीकें नयी आयाम अपनाने लगी हैं, जहाँ कथानक के विभिन्न पहलुओं का परीक्षण किया जा रहा है। साहित्यिक आलोचना अब केवल रचनाओं के पारंपरिक स्वरूप तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि डिजिटल माध्यमों के द्वारा प्रस्तुत नवीन संरचनाओं एवं अभिव्यक्तियों का भी गहन विश्लेषण किया जा रहा है। इस संदर्भ में, नई डिजिटल रचनाएँ पाठकों में नए सवाल और चिंतन उत्पन्न करती हैं, जो साहित्यिक परंपराओं में सुधार एवं नवाचार के लिए प्रेरक भूमिका निभाते हैं।

पारंपरिक एवं डिजिटल मंचों की तुलनात्मक चर्चा

पारंपरिक साहित्यिक मंचों और डिजिटल प्लेटफार्मों के बीच तुलना करते समय यह देखा जाता है कि दोनों के बीच एक गतिशील समन्वय एवं संघर्ष विद्यमान है। पारंपरिक साहित्य में जहाँ साहित्यकार दीर्घकालीन प्रक्रिया, सावधानीपूर्वक संपादन एवं प्रिंट मीडिया के माध्यम से अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करते हैं, वहीं डिजिटल प्लेटफार्मों पर लेखन त्वरित, संवादात्मक और तत्काल प्रतिक्रिया-उन्मुख होता है। चटर्जी[20] के अध्ययन के अनुसार, डिजिटल मंचों का यह लचीला स्वरूप परंपरागत साहित्यिक शैलियों के साथ अंतर्संबंध स्थापित करते हुए एक नई पहचान देता है।

डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर लेखकों को अपनी रचनात्मक प्रवृत्ति को अधिक स्वतंत्रता के साथ प्रकट करने का अवसर मिलता है, जिससे साहित्यिक परंपरा में नए प्रयोग सामने आते हैं। इस संदर्भ में, सोशल मीडिया ने पारंपरिक साहित्यिक मानदंडों को चुनौती देते हुए, रचनात्मकता के उन आयामों को उजागर किया है जिन्हें पहले अनदेखा किया जाता था। पारंपरिक प्रकाशन के ढांचे में, लेखक अक्सर आलोचकों और संपादकों के द्वारा तय की गई सीमाओं के भीतर रहते थे, जबकि डिजिटल युग में यह बाधाएँ ध्वस्त हो गई हैं। इससे लेखक एवं पाठक दोनों के बीच एक सहज, त्वरित एवं स्वतंत्र संवाद स्थापित हुआ है, जिससे साहित्यिक रचनाओं की गुणवत्ता एवं नवाचार में वृद्धि हुई है।

तुलनात्मक विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि डिजिटल साहित्य के आगमन से परंपरागत साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में नयी बहसें और विमर्श उत्पन्न हुए हैं। जहां परंपरागत आलोचना अक्सर संरचित, औपचारिक एवं स्थायी रहती थी, वहीं डिजिटल आलोचना में विविध दृष्टिकोण, तात्कालिक प्रतिक्रिया एवं अनौपचारिक शैली देखने को मिली है। इस परिवर्तन ने साहित्यिक अभिव्यक्ति के पारंपरिक स्वरूप में नयी जान फूंक दी है और साहित्यिक विधाओं के पुनर्निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ है।

इस विस्तृत विश्लेषण एवं चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग में हिंदी साहित्य ने एक नया रूप धारण कर लिया है। सोशल मीडिया एवं ब्लॉगिंग ने साहित्यिक रचनाओं में नवाचार को प्रोत्साहित करते हुए, पारंपरिक साहित्यिक मानदंडों में बदलाव का मार्ग प्रशस्त किया है। साहित्यिक आलोचना, कहानी कहने की विधा एवं पाठक-लेखक संवाद में हुए परिवर्तनों ने न केवल हिंदी साहित्य को समकालीन संदर्भ में प्रासंगिक बनाया है, बल्कि यह भविष्य के साहित्यिक अनुसंधान एवं रचनात्मक प्रयोगों के लिए एक मजबूत आधार भी प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, डिजिटल मंचों का प्रभाव हिंदी साहित्य के पुनराविष्कार में निर्णायक भूमिका निभाता हुआ देखा जा सकता है, जिससे साहित्य के पारंपरिक एवं आधुनिक स्वरूपों के बीच संतुलन एवं संवाद की नई संभावनाएँ उत्पन्न हो रही हैं।

निष्कर्ष : इस शोध पत्र में हिंदी साहित्य पर सोशल मीडिया एवं ब्लॉगिंग के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए यह पाया गया कि डिजिटल युग में साहित्यिक परंपराओं में एक व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया और ब्लॉगिंग ने पारंपरिक साहित्यिक रूपों में न केवल नवाचार की नई संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं, बल्कि लेखक-पाठक संवाद एवं आलोचना के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं।

हिंदी साहित्य में डिजिटल परिवर्तन ने रचनात्मक अभिव्यक्ति को विस्तृत करते हुए पारंपरिक विधाओं के साथ एक सजीव तालमेल स्थापित किया है। इस शोध के निष्कर्ष से यह प्रकट होता है कि डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से रचनाकारों को स्वतंत्रता एवं नवाचार के नए अवसर प्राप्त हुए हैं, जिससे साहित्य में विभिन्न दृष्टिकोण एवं प्रयोग की बहुलता देखने को मिली है।

साहित्यिक परिप्रेक्ष्य से यह अध्ययन संकेत करता है कि डिजिटल माध्यमों का प्रभाव भविष्य में भी हिंदी साहित्य के पुनराविष्कार एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आगे के अनुसंधान में विभिन्न ऑनलाइन साहित्यिक समुदायों, ब्लॉगिंग के नवाचार और डिजिटल आलोचना के स्वरूप पर विस्तृत अध्ययन करने की आवश्यकता है।

अंततः, यह शोध पत्र यह स्पष्ट करता है कि तकनीकी प्रगति ने हिंदी साहित्य में नये अध्याय की शुरुआत की है, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक एवं आधुनिक साहित्यिक रूपों में एक सशक्त संवाद स्थापित हुआ है। यह अध्ययन भविष्य के साहित्यिक अनुसंधान एवं रचनात्मक प्रयोगों के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Kumar, Ravi. Hindi Sahitya Ka Digital Yug. New Delhi: Rajkamal Prakashan, 2017. Print.
2. Banerjee, Ananya. "Digital Discourse: The Transformation of Indian Literature in the Social Media Age." Indian Journal of Cultural Studies 15.2 (2018): 113-127. Print.
3. Sharma, Neha. "Blogging Aur Hindi Sahitya: Ek Samvadatmak Vishleshan." Journal of Hindi Literature Studies 10.1 (2020): 45-62. Print.
4. Singh, Rajiv. "Social Media as a Catalyst for Literary Innovation in Hindi." Modern Indian Literature 23.3 (2019): 89-104. Print.
5. Kumar, Ravi. Hindi Sahitya Ka Digital Yug. New Delhi: Rajkamal Prakashan, 2017. Print.
6. Banerjee, Ananya. "Digital Discourse: The Transformation of Indian Literature in the Social Media Age." Indian Journal of Cultural Studies 15.2 (2018): 113-127. Print.
7. Sharma, Neha. "Blogging Aur Hindi Sahitya: Ek Samvadatmak Vishleshan." Journal of Hindi Literature Studies 10.1 (2020): 45-62. Print.
8. Jain, Priya. "Virtual Realms: Blogging and the Reinvention of Hindi Poetry." Indian Literary Review 12.2 (2021): 77-91. Print.
9. Bose, Anil. "Online Communities and the Evolution of Hindi Literary Criticism." South Asian Studies 26.1 (2019): 34-49. Print.
10. Desai, Mehul. "The Intersection of Social Media and Traditional Literary Forms in Hindi." Literature

and Society 17.2 (2019): 200-215. Print.

11. Chatterjee, Subhash. "The Rise of Digital Narratives in Indian Regional Literatures." Asian Journal of Communication 28.4 (2018): 350-365. Print.
12. Kumar, Ravi. Hindi Sahitya Ka Digital Yug. New Delhi: Rajkamal Prakashan, 2017. Print.
13. Mukherjee, Deepa. Digital Dastaan: How Social Media is Reshaping Hindi Storytelling. Mumbai: Navayana, 2020. Print.
14. Singh, Rajiv. "Social Media as a Catalyst for Literary Innovation in Hindi." Modern Indian Literature 23.3 (2019): 89-104. Print.
15. Sharma, Neha. "Blogging Aur Hindi Sahitya: Ek Samvadatmak Vishleshan." Journal of Hindi Literature Studies 10.1 (2020): 45-62. Print.
16. Bose, Anil. "Online Communities and the Evolution of Hindi Literary Criticism." South Asian Studies 26.1 (2019): 34-49. Print.
17. Desai, Mehul. "The Intersection of Social Media and Traditional Literary Forms in Hindi." Literature and Society 17.2 (2019): 200-215. Print.
18. Jain, Priya. "Virtual Realms: Blogging and the Reinvention of Hindi Poetry." Indian Literary Review 12.2 (2021): 77-91. Print.
19. Verma, Meena. Social Media Aur Sahitya: Naya Yug, Nayi Chunautiyan. Jaipur: Prabhat Prakashan, 2018. Print.
20. Chatterjee, Subhash. "The Rise of Digital Narratives in Indian Regional Literatures." Asian Journal of Communication 28.4 (2018): 350-365. Print.

•